आयोजन समिति के सदस्य

1. श्री एम.एल.नेताम- 9406108531
2. डॉ.के.के.मरकाम 9669927750
3. डॉ.आयशा कुरैशी
4. श्रीमति दीपिका सोम
5. श्री रविन्द्र सिंह चन्द्रवंशी 9407727106
6. श्री कुलेश्वर प्रसाद साहू 9425257931
7. श्री संजय मिश्रा
8. श्री अभिषेक मिश्र
9. श्री हेमप्रसाद पटेल 9754341675
10. श्री कमलनारायण ठाकुर

पंजीयन प्रपत्र

1. नाम :.....
2. जन्मतिथि :.....
3. पद :.....
4. विषय :.....
5. संस्था का नाम :.....
:.....
6. पता :.....
:.....
7. डिमाण्ड ड्राफ्ट नं. :.....
8. बैंक का नाम :.....
9. दिनांक व राशि :.....
10. शोध पत्र का शीर्षक :.....
11. मोबाईल नंबर :.....
12. ई-मेल आई डी :.....

शासकीय शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय चारामा, जिला-उ.ब.कांकेर(छ.ग.)

राष्ट्रीय सेमीनार दिनांक 09/02/2019

उच्च शिक्षा छ.ग.शासन द्वारा प्रायोजित

(छत्तीसगढ़ के वनांचल संस्कृति में औषधि ज्ञान सरंक्षण एवं संवर्धन)

प्रति,

.....

.....

.....

-आयोजक-

इतिहास विभाग

शासकीय शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय

चारामा, जिला-उ.ब.कांकेर(छ.ग.)

एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार

(छत्तीसगढ़ के वनांचल संस्कृति में औषधि ज्ञान सरंक्षण एवं संवर्धन)

राष्ट्रीय सेमीनार दिनांक 09/02/2019

डॉ.सरिता उइके

प्र.प्राचार्य एवं संरक्षक

शासकीय शहीद गेंदसिंह महाविद्यालय,चारामा

जिला-उ.ब.कांकेर(छ.ग.)

मो.नं. 8319150722

संयोजक-

डॉ.सरिता उइके

विभाग -(इतिहास)

मो.नं. 8319150722

आयोजन सचिव

श्री एम.एल.नेताम

विभाग -(राजनीति शास्त्र)

मो.नं. 8319150722

सह-सचिव

डॉ.के.के.मरकाम

विभाग -(भुगोल)

मो.नं. 9669927750

सह-सचिव

श्री रवीन्द्र सिंह चन्द्रवंशी

विभाग -(अर्थशास्त्र)

मो.नं. 9407727106

मान्यवर,

बस्तर अंचल का प्रवेश द्वार शासकीय शहीद गैंदसिंह महाविद्यालय चारामा जिला-उ.ब.कांकेर में इतिहास विभाग द्वारा दिनांक - 09/02/2019 को उच्च शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन के सहयोग से *छत्तीसगढ़ वनांचल संस्कृति में औषधि ज्ञान संरक्षण एवं संवर्धन* विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयो जन किया जा रहा है, जिसमें आप सादर आमंत्रित है, हमें पूर्ण विश्वास है कि आप इस शोध संगोष्ठी में उप-स्थित होकर अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करेगें।

महाविद्यालय का संक्षिप्त इतिहास

कंक ऋषि की तपो भूमि गिरि श्रृंखलाओं से आवेष्टित महानदी एवं नैनी नदी के तट पर स्थित शासकीय शहीद गैंदसिंह महाविद्यालय चारामा की स्थापना 16 अगस्त 1989 ई. को हुई। स्थापना का उद्देश्य अर्ध शहरी ग्रामीण तथा आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्र के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा का लाभ मिल सके, कला संकाय से प्रांरभ महा विद्यालय में वर्तमान में वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों की अध्यापन व्यवस्था है एवं एम.ए. राजनीति शास्त्र की कक्षायें संचालित है ।

महाविद्यालय का नाम देश की स्वतंत्रता के लिये मर मिटने वाले बस्तर के महान सपूत, परलकोटके जमींदार, जिन्होनें अंग्रेजो के दांत खट्टे किये थे - शहीद गैंदसिंह के नाम पर आधारित है।

महाविद्यालय में वर्तमान शिक्षा सत्र में 924 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, यहाँ के विद्यार्थियों द्वारा खेलकूद सांस्कृतिक कार्यक्रम, एन.सी.सी., एन.एस.एस. एवं विश्व विद्यालयीन परीक्षा में उत्कृष्ठ स्थान बनाकर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया गया है।

राजधानी रायपुर से दक्षिण दिशा में यह नगर 120 कि.मी. की दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग क्रं.30 पर स्थित है। चारामा से 17 कि.मी. की दूरी पर *चन्देली* ग्राम की पहाड़ियों में दस हजार वर्ष पूर्व की "Rock Paintings" देखने को प्राप्त हुई है। इस पेटिंग्स में एलियन और यू.एफ.ओ. (उडनतश्तरी) जैसी आकृति है। छ.ग.पुरातत्व विभाग द्वारा इस पेटिंग्स पर शोधके लिये अमेरिका स्पेश रिचर्स सेन्टर नासा को आमंत्रित किया गया था। वह शोधार्थियों के लिये शोध का विषय एवं पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र है, इसके अलावा 15 कि.मी.की दूरी पर सियादेही जलप्रपात, 45 कि.मी.की दूरी पर गंगरेल डेम एवं दुधावा डेम पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षितकरते हैं।

छत्तीसगढ़ के वनांचल संस्कृति में औषधि ज्ञान संरक्षण एवं संवर्धन परिचयात्मक

हिन्दूस्तान के ह्रदय में अवस्थित म.प्र. का दक्षिण पूर्वांचल छत्तीसगढ़ राज्य प्राकृतिक सौंदर्य एवं वन संपदा के अकूत भंडारो का स्वामित्व वाला राज्य है। राज्य के कुल क्षेत्र का 44.8भाग वनों से आच्छादित है। राज्य में अन्य क्षेत्रों की तुलना में बस्तर, दंतेवाड़ा, कांकेर, राजनांदगांव, कवर्धा, महासमुंद, जशपुर, सरगुजा, कोरबा, कोरिया, रायगढ़ जिलों में वनों का विस्तार अधिक है। ये क्षेत्र विभिन्न प्रकार के कीमती जड़ी बूटियों से भरे पड़े है।

इन वनाँचलों में बसने वाली सर्वाधिक जनजातीयसंस्कृति है इसके अलावा अन्य प्रजातियाँ भी निवास करती है, प्रकृति के निकट रहने के कारण इन प्रजातियों को वन औषधि के बार में अच्छा ज्ञान है। वे सदियों से इन्हीं जड़ीबुटियों के द्वारा कई तरह की कठिन से कठिन बीमारियों काइलाज करते आये है, जिस पर विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है। वे प्रकृति प्रदत्त पेड़ पौधों की जड़, छाल, फुल,पत्ते, कंदमूल,बीज, इसके अलावा विभिन्न प्रकार के पशु पक्षियों के माँस, खून, हडडी, गोबर व मूत्र से विभिन्न प्रकारकी बीमारियों का उपचार करते है जिसे जानना आवश्यक है, उनके ज्ञान का संरक्षण एवं संवर्धन होने से सार्वजनिक लोगों को लाभ प्राप्त होगा साथ ही वनाँचल श्रेत्र में रहने वाली प्रजातियों को रोजगार के अवसर प्राप्त होगें जो राज्य के विकास में सहायक होगा। इसी उद्देश्य के साथ राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन प्रस्तावित है।

शोध संगोष्ठी का उपशीर्षक-

1. छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाने वाली जड़ी बूटियों तथा उनका विभिन्न बीमारियों के उपचार में प्रयोग।
2. छत्तीसगढ़ में जड़ी बूटियों का संरक्षण एवं संवर्धन।
3. छत्तीसगढ़ में विभिन्न आयुर्वेदिक औषधालय एवं उनकी उपलब्धियाँ
4. छत्तीसगढ़ में विभिन्न आयुर्वेदाचार्य वैद्य एवं उनका उपचार तथा उपचार केन्द्र।
5. वन औषधियों के विकास के लिये शासन के द्वारा किये जाने प्रयास ।
6. वनौषधियाँ के क्षेत्र में अब तक किये गये कार्य एवं विकास की संभावनायें।
7. छत्तीसगढ़ में वन औषधि आधारित उद्योग की संभावनाएँ।

शोध पत्रों का प्रेषण -

इतिहास विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में शोध पत्र प्रेषित करने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव-

1. शोध पत्र सारांश (Abstract)अधिकतम 02 पृष्ठों में तथा पूर्ण शोध पत्र अधिकतम 10 पृष्ठों में हो ।
2. शोध पत्र तथा शोध सारांश (हार्ड कापी) ए-4 आकार के पेपर में होना चाहिये। इसकी सॉफ़्ट कापी महाविद्यालय के ई-मेल आईडी seminar2019charama@gmail.com पर ई-मेल किया जाना आवश्यक है।
3. संगोष्ठी हेतु शोध पत्र का माध्यम हिन्दी/अंग्रेजी होगा, हिन्दी के लिये Kurti Dev 010 (Font Size -14) तथा अंग्रेजी के लिये Times New Roman(Font Size-12) का प्रयोग करेगें।
4. शोध पत्र सारांश भेजने की अंतिम तिथि 02 फरवरी 2019 तथा पूर्ण प्रेषित करने की अंतिम तिथि 05 फरवरी 2019 है।

पंजीयन शुल्क-

प्राध्यापकों हेतु 700/- अतिथि व्याख्याताओं एवं शोध छात्रों के लिये- 300/- अन्य विद्यार्थी के लिये 200/-

तकनीकी सत्र

तिथि उदघाटन सत्र	10.30 से 11.30 बजे तक
प्रथम तकनीकी सत्र	11.30 से 01.30 बजे तक
भोजन अवकाश	01.30 से 02.00 बजे तक
द्वितीय तकनीकी सत्र	02.00 से 04.30 बजे तक
प्रमाण पत्रों का वितरण	04.30 बजे से

नोट- प्रतिभागी यात्रा व्यय अपनी संस्था से प्राप्त करने का कष्ट करें, आयोजक संस्था से यात्रा भत्ता प्राप्त नहीं होगा।

संगोष्ठी
संस्कृति में
एवं संवर्धन
09.02.2019
विभाग
चारामा

संगोष्ठी

गैंदसिंह महाविद्यालय में संगोष्ठी, विशेषज्ञों ने रखी राय

जड़ी-बूटियों का संरक्षण व संवर्धन जरूरी : डॉ. उइके

चारामा। नईदुनिया न्यूज

नगर के शासकीय शहीद गैंदसिंह महाविद्यालय में एक दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन इतिहास विभाग द्वारा किया गया। यह राष्ट्रीय संगोष्ठी छत्तीसगढ़ की वनांचल संस्कृति में औषधि ज्ञान संरक्षण व संवर्धन के विषय पर हुई। संगोष्ठी के प्रारंभ में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सरिता उइके ने राज्य के औषधियों के बारे में बताया कि छत्तीसगढ़ वन प्रधान राज्य है जिसके 44.8 प्रतिशत भाग पर वनों की सघनता है।

संगोष्ठी में उपस्थित अतिथिगण व प्रोफेसर।

यहां पर विभिन्न प्रकार की कीमती जड़ी बूटियां पाई जाती है। यहां पर बसने वाली वनांचल संस्कृति के लोग परम्परागत रूप से इन्हीं वन औषधियों व विभिन्न जीव-जन्तुओं से विभिन्न प्रकार के रोगों का इलाज परम्परागत रूप से करते आ रहे हैं परन्तु उनका यह ज्ञान धीरे-धीरे विलुप्त होता जा रहा है। वनों से जड़ी बूटियां भी विलुप्त होती जा रही है, जिसका संरक्षण व संवर्धन होना आवश्यक है। इससे पर्यावरण की सुरक्षा व इस पर आधारित उद्योगों की संभावनाएं बढ़ सकती है। लोगों को स्वास्थ्य लाभ मिल सकता है।

डॉ. महादेव प्रसाद पांडे, आचार्य डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र ने बताया कि प्रदेश की महानदी, इन्द्रवती नदी, शिवनाथ नदी तथा जितनी भी नदी घाटी संस्कृति है सब जगह जन-जातीय आदिम प्रजातियां निवास करती है। उनके औषधि ज्ञान उपचार संबंधी जानकारियों को संरक्षति व संवर्धन करने के लिए विशेष अभियान व जन चेतना की आवश्यकता है। प्रो. शैलेन्द्र कुमार सिंह ने कहा कि भारत में अमूल्य ज्ञान का खजाना है। प्राचीनकालीन युग में यहां पर आयुर्वेदिक उपचार का पता चलता तथा इससे संबंधित विभिन्न ग्रंथ लिखे गए, परन्तु विदेशी आक्रमण के कारण वे सब नष्ट कर दिए गए। डॉ. विजय बघेल, डॉ. चेतनराम पटेल, डॉ. किरण तारम ने विभिन्न बीमारियों के उपचार के संबंध में अपने विचार रखे। वैध रामप्रसाद निषाद ने पेड़ पौधों के संरक्षण, शासन द्वारा किए जाने वाले प्रयास व उपचार के संबंध में जानकारी दी। इस अवसर पर श्रीराम प्रताप निषाद, डॉ. किरण तारम, डॉ. विजय बघेल, डॉ. पुष्पलता मिश्रा, प्राध्यापकगण प्रो. एमएल नेताम, डॉ. केके मरकाम, प्रो.रवीन्द्र सिंह चन्द्रवंशी, प्रो. हेमप्रसाद पटेल, प्रो कमलनारायण ठाकुर, प्रो. कुलेश्वर साहू, प्रो. अभिषेक मिश्र, अनूप यादव, हितेन्द्र बोरकर, लक्ष्मी छाया भोजवानी, रूपेन्द्र ठाकुर, सीमा यादव, हरिराम साहू, मधु कावड़े सहित महाविद्यालय के स्टाफ, छात्र-छात्राएं तथा विभिन्न महाविद्यालयों से आए हुए प्राध्यापक गण, कर्मचारी अन्य अतिथि उपस्थित थे।

प्रादेशिकी
रायपुर शुक्रवार, 28 फरवरी 2020

शहीद महाविद्यालय में राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी आयोजित

चारामा, 27 फरवरी (देशबन्धु)। छग में गांधीवादी आंदोलन एवं उनके विचारो का प्रभाव विषय को लेकर एक दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन शहीद गैंदसिंह महाविद्यालय जैसाकर्रा चारामा मे आयोजित हुआ। संगोष्ठी का आयोजन दो अलग अलग सत्र मे किया पहले तकनीकि सत्र मे मुख्य अतिथि डॉ सुभास दत् झा पूर्व प्राचार्य शा.बिलासा स्नातकोत्तर कन्या महाविघालय बिलासपुर छ.ग.,अध्यक्षता डॉ.चेनतराम पटेल प्राचार्य शास.इन्दरू केवट कन्या महा.कांकेर ,विशेष अतिथि सनत कुमार मिश्र गोंदिया महाराष्ट्र,शरद ठाकुर सहायक प्रधायपक भानुप्रतापपुर,श्यामानंद डेहरिया सहा.प्रध्यापक भानुप्रतापपुर, संस्था की प्राचार्य डॉ सरिता के द्वारा महात्मा गॉधी और मॉ सरस्वती की छायाचित्र की पुजा अर्चना कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था आज की युवा पीढी को छग में आजादी के समय गॉधी जी के द्वारा किये गये आंदोलन और छग के प्रति उनके क्या विचार थे,से छात्रो को अवगत कराना था। कार्यक्रम के शुभारंभ मे डॉ सरिता उईके के द्वारा महाविघालय का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जिसके मुख्य अतिथि डॉ सुभास दत् झा पूर्व प्राचार्य शा.बिलासा स्नातकोत्तर कन्या महाविघालय बिलासपुर छ.ग. के द्वारा महात्मा गॉधी के आजादी के समय छ.ग. मे आगमन से लेकर उनके आंदोलनो की कहानियो की विस्तार पूर्वक जानकारी दी दिसम्बर 1920 मे महात्मा गॉधी का छग मे प्रथम प्रवास जल सत्याग्रह के संबंध मे हुआ और दुसरी बार उनका प्रवास 1933 मे तिलक कोष एवं स्वराज कोष के लिए हुआ था। धमतरी जिले के कंडेल ग्राम मे किसानो का सत्याग्रह छोटेलाल श्रीवास्तव के नेतृत्व मे चल रहा था। शासन के तुगलकी फरमान के विरूद्ध जल सत्याग्रह किया था इस सत्याग्रह से अभिभूत होकर गांधी जी 1920 मे किसानो के आंदोलन मे शामिल होने आये थे। 1942 मे अंग्रेजो भारत छोडो आंदोलन का आहन पर पुरा छग अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ एक हो गया। गांधी जी के विचारो ने देश की आजादी मे छग के योगदान को बल दिया। गांधी जी ने छग के रायपुर शहर से छुआछुत से आजादी का बिगुल भी फूंका था। ऐसी कई रोचक जानकारियॉ उन्होने गांधी जी के संबंध मे दी। दुसरे चरण मे मुख्य अतिथि रमेन्द्र मिश्र अध्यक्षछग इतिहास,संस्कृति एंव पुरातत्व रायपुर ,आर.पी शर्मा शिक्षा विद् उज्जैन के द्वारा महात्मा गॉधी के आंदोलनो से जुडी कई बातो को जो पुस्तको मे ढुढने से भी नही मिल पाती है, गॉधी जी की उन बारिकी बातो को छात्रो के बीच रखा। इसके अलावा अतिथियो ने केदार नाथ ठाकुर के द्वारा बस्तर की आभूषणो पर लिखी पुस्तक बस्तर भूषण ,हीरालाल काव्योपाध्याय जी के प्रथम छग व्याकरण ,1875 मे छग म.प्र का रायपुर मे निर्मित पहला म्युजियम मंहत घासीदास संग्रहालय जैसे कई कहानियो ,रचनाओ को छात्रो बीच रखा। आजादी के समय गॉधी जी का प्रभाव छग के युवाओ पर अधिक पडा था, आज के युवाओ को अपने ऐतिहासिक धरोहर एंव महा पुरूषो के छग मे किये गये योगदान को पढने और जानने की आवश्यक्ता व उसे संरक्षित करने की आवश्यक्ता है। वही संगोष्ठी के दौरान छात्रो एंव प्रोफेसरो के द्वारा भी कई सवाल पुछे गये जिनका जवाब विद्वानो ने दिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर आये हुए सभी अतिथियो को संस्था की ओर से स्मृति चिन्ह, प्रसस्ति पत्र प्रदान किया गया ,साथ ही अतिथियो की ओर से गांधी जी से जुडी कई अच्छी पुस्तको की जानकारी छात्रो को दी गई,जिससे वे गांधी जी को और अच्छे से जान सकेगे। कार्यक्रम के दौरान संस्था के प्रो.एम एल नेताम, के के मरकाम, खीन्द्र सिंह चन्द्रवंशी, कुलेश्वर प्रसाद साहु, हेम प्रसाद पटेल, कमलनारायण ठाकुर, दीपिका सोम, संजय मिश्रा, अनूप यादव, जीवराखन हितेन्द्र बोरकर, मधुराम कावडे, धर्मेन्द्र सिन्हा, सुधीर साहु एंव महाविघालय के सभी कर्मचारियो का सहयोग आयोजन को सफल बनाने मे रहा।